लक्ष्मी सीड्स

जौ का अधिक उत्पादन हेतु सुझाव

लक्ष्मी सीड्स
रिसर्च जौ किस्में
लक्ष्मी सुपर
माधव
खेत प्रदर्शन
माधव
रिसर्च जौं बीज
लक्ष्मी सीड्स कार्पो., श्रीगंगानगर
AS ISO 9001:2015 CERTIFIED CO.
लक्ष्मी सीड्स का वादा
पैदावार सबसे ज्यादा
लक्ष्मी सीड्स
MADHAV
BARLEY SEEDS
Net Wt. 15 kg
लक्ष्मी सीड्स कॉर्पोरेशन
लक्ष्मी सीड्स कार्पो.
लक्ष्मी सीड्स कार्पो.
लक्ष्मी सीड्स का वादा
पैदावार सबसे ज्यादा
AN ISO 9001:2008 CERTIFIED COMPANY

बुवाई का समय

जो की बिजाईरबी मौसम में की जाती है। सिंचित क्षेत्रों में 15 अक्टूबर से 15 नवम्बर तक बिजाई करना सबसे उपयुक्त रहता है, जबकि बारानी क्षेत्रों में 10 अक्टूबर से 25 अक्टूबर तक बिजाई कर लेनी चाहिए। यदि किसी कारण से बिजाई में देरी हो जाए तो नवम्बर के अंत तक बिजाई की जा सकती है

खेत की तैयारी एवं भूमि का प्रकार

जौ की खेती के लिए जौ फसल वैसे तो कम उर्वरा, बारानी, क्षारीय और लवणीय भूमि में भी उगाय जा सकता हैए लेकिन हल्की व दोमट मिट्टीए इस फसल के लिए उपयुक्त रहती है। इसके लिए एक गहरी जुताई के बाद 2-3 हल्की जुताइयाँ देशी हल, कल्टीवेटर/रोटावेटर द्वारा करके मिट्टी को भुरभुरा बना लें। अंतिम जुताई के समय खेत को समतल करें ताकि सिंचाई व जल निकास में कोई समस्या न हो । आवश्यकता अनुसार पलेवा देकर उचित नमी की स्थिति में बिजाई करें

बीज की मात्रा

सिंचित क्षेत्रों में जो की बिजाई के लिए 35-40 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ पर्याप्ति होता है, जबकि बारानी क्षेत्रों में 40-45 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ की आवश्यकता होती है। उचित बीज दर रखने से पौधों की संख्या संतुलित रहती है और फसल अच्छी बढ़वार करती है।

बिजाई का तरीका

अच्छी पैदावार लेने के लिए जो का बीज बखेर कर न बोये, लाईन से लाईन का अन्तर 22 से.मी., पौधों में अन्तर 5 से.मी. रखते हुए सीड ड्रिल से बिजाई करें। यदि विलम्ब से बिजाई कर रहे हैं तो लाइनों के मध्य अन्तर घटा कर 18 सें.मी. रखें। जो की बिजाई जीरो ड्रिल विधि द्वारा भी की जा सकती है। जीरो टिलेज विधि अपना कर किसान पानी की बचत कर सकते हैं।

खाद व उरर्वक की मात्रा

तीन साल में एक बार ढ़ाई से त्तीन टन सडी गली गोबर की खाद बुवाई से एक माह पहले अवश्य दें। बुवाई से पूर्व या बुवाई के समय 40 किग्रा डी.ए.पी. और 25 किग्रा युरिया प्रति एकड़ दें। प्रथम सिंचाई के समय 35 किग्रा युरिया और दाना बनते समय 20-25 किग्रा युरिया दें। ध्यान रहे पौधो की उंचाई ज्यादा है तो तीसरे स्तर की युरिया ना दें। असिंचित क्षेत्रों में खाद की मात्रा 15-20 प्रतिशत कम करके बुवाई के समय ही देवें।

नोट - (कुल 40 किग्रा नाईट्रोजन और 20 किग्रा फास्फोरस प्रति एकड़ दें। जिसमें नाईट्रोजन तीन स्तर बुवाई के समयए प्रथम सिंचाई और दाना बनते समय में दें ।)

सिंचाई

हल्की व दोमट मिट्टी में 3 से 4 सिंचाई और भारी मिट्टी में 2 से 3 सिंचाई की आवश्यकता होती है। प्रथम सिंचाई बुवाई के 25-30 दिन बाद व बाद में 30-35 दिन के बाद सिंचाई करें। दाने बनने की अवस्था में सिंचाई अवश्य करें।

खरपतवार नियंत्रण

जो की फसल में खरपतवारों के नियन्त्रण हेतु मिट्टी में प्रर्याप्त नमी होने पर निम्न खरपतवार नाशियों का प्रयोग फसल की बुवाई के 30-35 दिन बाद Isoproturon + 2,4-D / Metsulfuron या Sulfosulfuron + Metsulfuron का प्रयोग करें।

कटाई

जब बालियाँ पूरी तरह पक जाएँ और दाने सख्त हो जाएँ, तब फसल की कटाई करें।
आजकल कंबाइन हार्वेस्टर से कटाई करने पर समय और लागत दोनों
की बचत होती है।

टिप्पणी

ऊपर दी गयी सलाह हमारे अनुभवए फील्ड ट्रायल एवं अनुसंधान केन्द्रों पर किये गये प्रयोगों पर आधारित है। लेकिन प्राकृतिक कारण जैसे जलवायुए भूमि का प्रकार एवं कृषि पतियों के कारण उपरोक्त जानकारी में अन्तर हो सकता है। बीज की गुणवत्ता के अलावा हम किसी तरह की गारन्टी नहीं ले सकते। क्योंकि अन्य परिस्थितियाँ हमारे नियंत्रण से बाहर है। ऊपर दी गई जानकारी किसान भाईयों की समृद्धि और सफलता के लिए है।